



# Kumud

01 Apr 1957

12:35 PM

Muzaffarpur

Model: Web-Pitridosh-Report

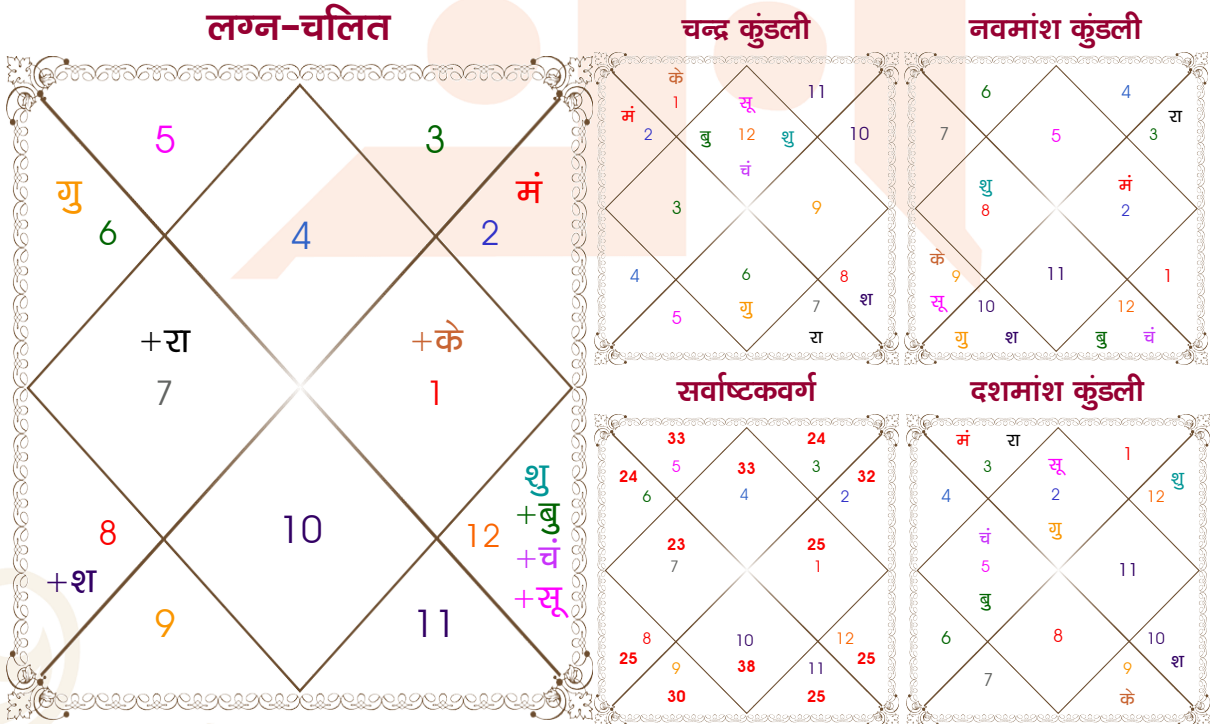
Order No: 119471601

तिथि 01/04/1957 समय 12:35:00 वार सोमवार स्थान Muzaffarpur चित्रपक्षीय अयनांश : 23:15:49  
अक्षांश 26:07:00 उत्तर रेखांश 85:23:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार 00:11:32 घंटे

| पंचांग                      | अवकहड़ा चक्र                |
|-----------------------------|-----------------------------|
| साम्पातिक काल : 01:24:02 घं | गण : देव                    |
| वेलान्तर : 00:04:00 घं      | योनि : गज                   |
| सूर्योदय : 05:40:27 घं      | नाडी : अन्य                 |
| सूर्यास्त : 18:04:56 घं     | वर्ण : विप्र                |
| चैत्रादि संवत : 2014        | वश्य : जलचर                 |
| शक संवत : 1879              | वर्ग : सिंह                 |
| मास : चैत्र                 | रैजा : पूर्व                |
| पक्ष : शुक्ल                | हंसक : जल                   |
| तिथि : 1                    | जन्म नामाक्षर : ची-चित्रलता |
| नक्षत्र : रेवती             | पाया(रा.-न.) : रजत-स्वर्ण   |
| योग : ऐन्द्र                | होरा : बुध                  |
| करण : बव                    | चौघड़िया : उद्वेग           |

| विंशोत्तरी        | योगिनी               |
|-------------------|----------------------|
| बुध 2वर्ष 1मा 6दि | उल्का 0वर्ष 8मा 27दि |
| राहु              | उल्का                |
| 08/05/2009        | 28/12/2023           |
| 08/05/2027        | 28/12/2029           |
| राहु 19/01/2012   | उल्का 28/12/2024     |
| गुरु 14/06/2014   | सिद्धा 27/02/2026    |
| शनि 20/04/2017    | संकटा 29/06/2027     |
| बुध 07/11/2019    | मंगला 29/08/2027     |
| केतु 25/11/2020   | पिंगला 28/12/2027    |
| शुक्र 25/11/2023  | धान्या 28/06/2028    |
| सूर्य 19/10/2024  | भामरी 26/02/2029     |
| चन्द्र 20/04/2026 | भद्रिका 28/12/2029   |
| मंगल 08/05/2027   |                      |

| ग्रह  | व | अ | अंश      | राशि   | नक्षत्र    | पद | स्वामी | अं.   | स्थिति     | षट्बल | चर     | स्थिर  | ग्रह तारा |
|-------|---|---|----------|--------|------------|----|--------|-------|------------|-------|--------|--------|-----------|
| लग्न  |   |   | 06:02:36 | कर्क   | पुष्य      | 1  | शनि    | बुध   | ---        | 0:00  |        |        |           |
| सूर्य |   |   | 18:01:49 | मीन    | रेवती      | 1  | बुध    | बुध   | मित्र राशि | 1.71  | मातृ   | पितृ   | जन्म      |
| चंद्र |   |   | 28:21:08 | मीन    | रेवती      | 4  | बुध    | शनि   | सम राशि    | 1.19  | अमात्य | मातृ   | जन्म      |
| मंगल  |   |   | 15:46:58 | वृष    | रोहिणी     | 2  | चंद्र  | शनि   | सम राशि    | 1.19  | पुत्र  | भ्रातृ | प्रत्यारि |
| बुध   |   |   | 29:48:44 | मीन    | रेवती      | 4  | बुध    | शनि   | नीच राशि   | 0.89  | आत्मा  | ज्ञाति | जन्म      |
| गुरु  | व |   | 01:46:41 | कन्या  | उ०फाल्गुनी | 2  | सूर्य  | गुरु  | शत्रु राशि | 1.03  | कलत्र  | धन     | क्षेम     |
| शुक्र | अ |   | 14:37:15 | मीन    | उ०भाद्रपद  | 4  | शनि    | राहु  | उच्च राशि  | 0.85  | ज्ञाति | कलत्र  | अतिमित्र  |
| शनि   | व |   | 20:59:15 | वृश्चि | ज्येष्ठा   | 2  | बुध    | शुक्र | शत्रु राशि | 1.15  | भ्रातृ | आयु    | जन्म      |
| राहु  | व |   | 26:48:57 | तुला   | विशाखा     | 3  | गुरु   | शुक्र | मित्र राशि | ---   | ज्ञान  | मित्र  |           |
| केतु  | व |   | 26:48:57 | मेष    | कृतिका     | 1  | सूर्य  | सूर्य | मित्र राशि | ---   | मोक्ष  | क्षेम  |           |



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

